3:25 4G 1.00 KB/S Vo LTE1 47
10.Amita , shiks...

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2017

शिक्षा और संस्कृति का सह-सम्बन्ध

डॉ. अमिता जैन
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा संकाय
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा और संस्कृति का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। शिक्षित व्यक्ति संस्कारित होगा, यह आवश्यक नहीं है, परन्तु संस्कारी व्यक्ति को शिक्षित कहा जा सकता है। आज की शिक्षा ने व्यक्ति को सूचनाओं से भर दिया है। नैतिक मूल्यों को पढ़ाया भी जा रहा है, परन्तु उन मूल्यों का जीवन में प्रवेश नहीं हो रहा है इसलिए मनुष्य समाज दुःखी दिखाई देता है। शिक्षा को आचरण में लाने से संस्कृति का निर्माण होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी आधार पर शिक्षा और संस्कृति में सह-सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

प्रस्तावना

ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ नहीं है। 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।' वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी यही कहते हैं कि ब्रह्म ही ज्ञान है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है, क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है। जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है। समाज विरोधी तत्त्वों को ज्ञान को प्रभाव से दबा देने की शक्ति प्राप्त करता है। व्यक्ति स्वयं से परिचय करके ही स्वतंत्र हो सकता है।

संस्कृति शब्द के सम्+कृति दो मुख्य भाग हैं। सम् एक भाव है कृति नाना भाव है। कार्य का ही नाम कृति है। सम् की कृति ही संस्कृति है। एक की अनेकता ही संस्कृति है। 'एकं ज्ञानं ज्ञानम्' -'विविधं ज्ञानं विज्ञानम्' कहा गया है। अनेकता में एकता ज्ञान का विषय है, एक से अनेक कैसे होते हैं - यह विज्ञान का विषय है। ज्ञान परा विद्या है, विज्ञान अपराविद्या है। इन दोनों का स्वरूप ही संस्कृति कहलाता है।

हमारे अध्यात्म के चार भाग है - आत्मा, मन, बुद्धि और शरीर। शरीर और बुद्धि शिक्षा में तथा मन और आत्मा धर्म के विषय बन गए। शिक्षा धर्म निरपेक्ष हो गई। तब व्यक्ति स्व-धर्म की पहचान कहाँ सीखेगा। शिक्षा के मूल धरातल अधिदैविक, अधिभौतिक एवं आध्यात्मिक तो खो ही गए। व्यक्तित्व विकास पीछे छूट गया। योग-क्षेम की परिभाषा ही बदल गई। ज्ञान छूट गया, विज्ञान रह गया। ब्रह्मा छूट गया, माया रह गई। सम् छूट गया कृति रह गई। यानि संस्कृति खण्ड-खण्ड हो गई।

परिभाषा के रूप में ब्रह्म की सम् रूप आंशिक कृति 'कृति' है तथा पूर्णकृति 'संस्कृति' है। विश्वेश्वर की समष्टि रूप विश्व संस्कृति के अव्यक्त, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी चार अवयव माने

शब्द–ब्रह्म E ISSN 2320 – 0871